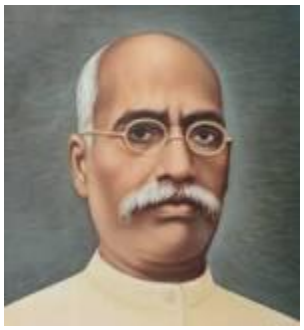

देवकीनंदन खत्री

देवकीनंदन खत्री का जन्म 18 जून, 1861 को पूसा, मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ था। उनके पिता का नाम लाला ईश्वरदास था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू-फारसी में हुई थी। बाद में उन्होंने हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी का भी अध्ययन किया। उन्होंने वाराणसी में एक प्रिंटिस प्रेस की स्थापना की और वर्ष 1883 में हिंदी मासिक "सुदर्शन" की शुरुआत की। उनका निधन 1 अगस्त, 1913 को हुआ था

बाबू देवकीनंदन खत्री ने जब उपन्यास लिखना शुरू किया उस जमाने में अधिकतर उर्दू का ही प्रयोग होता था। ऐसी परिस्थिति में खत्री जी ने ऐसी रचना करने का लक्ष्य रखा, जिससे कि देवनागरी हिंदी का प्रचार-प्रसार हो। चंद्रकांता उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि जो लोग हिंदी लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे या उर्दू का उपयोग करते थे, उन्होंने केवल इस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिंदी सीखी। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने चंद्रकांता सन्तति लिखी, जो चंद्रकांता की अपेक्षा कई गुणा रोचक था। इन उपन्यासों को पढ़ते वक्त लोग खाना-पीना तक भी भूल जाते थे। इन उपन्यासों की भाषा इतनी सरल रखी कि इन्हें पांचवी कक्षा के छात्र भी पढ़ लेते हैं। इन दो उपन्यासों के लगभग 2000 पृष्ठ हैं, लेकिन एक भी क्षण ऐसा नहीं आता जहां पाठक ऊब जाएं। इनके अन्य उपन्यास -- चंद्रकांता संतति, काजर की कोठरी, नरेंद्र-मोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेंद्र वीर, गुप्त गोंडा, कटोरा भर, भूतनाथ जैसी कृतियां काफी चर्चित रहीं।